क्या पाठ्य पुस्तकों के दिन लद गए?

सवाल यह है कि क्या कंप्यूटर देर-सबेर मुद्रित पाठ्य पुस्तकों का स्थान ले लेंगे? कुछ देशों में शायद यह प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। कंप्यूटर विशेषज्ञों की मदद से शिक्षा शास्त्री इस बात पर विचार कर रहे हैं कि आज से दस साल बाद विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों का स्वरूप क्या होगा। जैसे एक पाठ यह हो सकता है कि एक झील में ज़हरीला रसायन घुल गया है और छात्रों को सोचना है कि इससे कैसे निपटें। उन्हें किसी झील वगैरह पर जाने की ज़रूरत नहीं है। कंप्यूटर की मदद से वे विभिन्न विकल्पों की छानबीन कर सकते हैं।

वरमॉन्ट विश्वविद्यालय में भूगर्भ विज्ञान के शिक्षक पौल बियरमैन बताते हैं कि उन्होंने बरसों से पाठ्य पुस्तक का उपयोग नहीं किया है। अपनी कक्षा में पाठ्य पुस्तकों की बजाय वे कंप्यूटर अनुकृतियों, प्रदर्शनों और अन्य ऐसे प्रोजेक्ट्स की मदद लेते हैं जिनमें छात्रों को कुछ क्रिया करनी होती है। जैसे वे वरमॉन्ट के लैण्डस्केप के पिछले 200 वर्षों के फोटो संग्रह में से चित्र दिखाकर छात्रों को यह समझने में मदद करते हैं कि लैण्डस्केप में परिवर्तन कैसे होता है।

बियरमैन जैसे शिक्षक पुस्तकों को कई वजहों से छोड़ रहे हैं। उनका कहना है कि पुस्तकें तैयार करने और छापने में बहुत समय लगता है। जब तक वे छपकर तैयार होती हैं, तब तक पुरानी पड़ जाती हैं। उनका मत है कि कई अध्ययनों से पता चला है कि पढ़ने जैसी निष्क्रिय गतिविधि से सीखना काफी मुश्किल होता है।

वर्ष 2000 में नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट 'लोग कैसे सीखते हैं' में खोज पद्धति पर ज़ोर दिया गया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि छात्र उस दिशा में सहजता से बढ़ते हैं जिधर उनकी जिज्ञासा उन्हें धकेलती है। शिक्षक इसमें मात्र मददगार हो सकते हैं।

बियरमैन जैसे शिक्षकों का कहना है कि इंटरनेट इस तरह सीखने में बहुत मददगार हो सकता है। मगर शायद बियरमैन ने यह नहीं सोचा कि कंप्यूटर की बजाय वास्तविक गतिविधियां और भी कारगर रहेंगी।

कुछ लोग तो सिर्फ इतना करने की कोशिश कर रहे हैं कि तमाम पाठ्य सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध करा दें और शिक्षक अपनी सुविधा के अनुसार इसका उपयोग कर सकें। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियां तो मानती हैं कि जल्दी ही अधिकांश पाठ्य पुस्तकें इंटरनेट पर उपलब्ध हो जाएंगी।

अभी भारत में यह दिन थोड़ा दूर लगता है मगर इस मामले में विचार करना ज़रूरी है क्योंकि स्कूलों में कंप्यूटर तो पहुंचने ही लगे हैं। कई लोग सोचते भी हैं कि कंप्यूटर शिक्षक औऱ पाठ्य पुस्तक दोनों का स्थान ले सकता है। मगर सवाल तो यह है कि क्या यह बच्चों के सीखने की दृष्टि से अच्छा होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***